पुस्तक समीक्षा

▸ डॉ. उमेशचन्द्र सिरसवारी, ग्रा. आटा, पो. मौलागढ़, तह. चंदौसी, जि. सम्भल (उ.प्र.) मो. 9720899620, 9410852655

धर्म, द्वंद्व और दैवी चेतना का महाकाव्यात्मक विस्तार

'श्रीकृष्ण-अर्जुन युद्ध'

लेखक का साहित्यिक व्यक्तित्व बहुआयामी है। उनकी पूर्ववर्ती रचनाएँ जहाँ बाल-मनोविज्ञान, सरलता और रोचकता के लिए जानी जाती हैं, वहीं इस खंडकाव्य में वे अपनी वैचारिक परिपक्वता और काव्य-निपुणता का परिचय देते हैं। यह कृति उनकी सातवीं पुस्तक के रूप में उनके सृजनात्मक विकास का प्रमाण प्रस्तुत करती है।

'श्रीकृष्ण-अर्जुन युद्ध' समकालीन हिंदी खंडकाव्य परंपरा में एक उल्लेखनीय और सार्थक हस्तक्षेप के रूप में सामने आती है। शिव मोहन यादव जो बालसाहित्य के क्षेत्र में अपनी सशक्त उपस्थिति के लिए जाने जाते हैं, इस कृति में अपनी रचनात्मक क्षमता का विस्तार करते हुए एक गंभीर और चुनौतीपूर्ण विधा खंडकाव्य में सफलतापूर्वक प्रस्तुत करते हैं। यह कृति न केवल पौराणिक प्रसंगों का पुनर्सृजन है, बल्कि उसमें निहित दार्शनिक, नैतिक और मानवीय मूल्यों की पुनर्प्रतिष्ठा का प्रयास भी है।

पुस्तक का नाम : श्रीकृष्ण-अर्जुन युद्ध
विधा : खंडकाव्य
लेखक : शिव मोहन यादव
समीक्षक : डॉ. उमेशचन्द्र सिरसवारी
प्रकाशक : अद्विक पब्लिकेशन, दिल्ली
प्रथम संस्करण : 2024
मूल्य : 160 रुपए
पृष्ठ : 102

'श्रीकृष्ण-अर्जुन युद्ध' को ग्यारह खंडों में विभाजित किया गया है, ये खंड हैं- अर्घ्य खंड, चिंतन खंड, ब्रह्मलोक भ्रमण खंड, बैकुंठ भ्रमण खंड, कैलाश भ्रमण खंड, इंद्र-लोक भ्रमण खंड, व्यथा खंड, नारद-चित्रसेन संवाद, अभयदान खंड, नारद-श्रीकृष्ण संवाद तथा युद्ध खंड प्रमुख हैं। इन खंडों का सुविचारित संयोजन काव्य को क्रमबद्धता और व्यापकता प्रदान करता है। प्रत्येक खंड अपने आप में एक स्वतंत्र भावभूमि रचता है, किंतु समग्र रूप से वे एक सशक्त कथानक का निर्माण करते हैं।

काव्य का प्रमुख आकर्षण इसकी कल्पनाशीलता और पौराणिक प्रसंगों की नवीन व्याख्या में निहित है। लेखक ने ब्रह्मलोक, बैकुंठ और कैलाश जैसे दैवीय स्थलों की यात्रा के माध्यम से आध्यात्मिक आयामों को विस्तार दिया है। साथ ही, नारद और चित्रसेन के संवादों तथा श्रीकृष्ण के साथ संवादों के माध्यम से विचारात्मक गहराई और दार्शनिक विमर्श को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

भाषा की दृष्टि से कृति अत्यंत सरस, प्रवाहमयी और सहज है। लेखक ने कठिन दार्शनिक भावों को भी सरल अभिव्यक्ति में प्रस्तुत कर पाठकों के लिए ग्राह्य बनाया है। छंदों की लयात्मकता और भावों की सघनता काव्य को प्रभावोत्पादक बनाती है। विशेषतः 'व्यथा खंड' और 'युद्ध खंड' में भावनात्मक तीव्रता और नाटकीयता अपने चरम पर दिखाई देती है, जो पाठक को अंत तक बांधे रखती है।

वर्तमान समय में जहाँ महाकाव्य और खंडकाव्य जैसी दीर्घ विधाएँ अपेक्षाकृत उपेक्षित हो गई हैं, वहाँ शिव मोहन यादव का यह प्रयास अत्यंत सराहनीय है। उन्होंने न केवल इस विधा की परंपरा को पुनर्जीवित किया है, बल्कि उसे समकालीन संदर्भों से भी जोड़ा है। यह कृति पाठकों को केवल मनोरंजन ही नहीं, बल्कि जीवन-दृष्टि, नैतिकता और आत्मचिंतन के लिए भी प्रेरित करती है।

प्रस्तुत खंडकाव्य में लेखक ने सर्वप्रथम मंगलाचरण प्रस्तुत किया है, जिसमें भक्ति, विनम्रता और काव्य-संवेदना का सुंदर समन्वय दिखाई देता है। कवि ने आरंभ में श्री गणेश का स्मरण कर पारंपरिक आस्था का निर्वाह किया है, जो भारतीय काव्य-परंपरा का प्रमुख तत्व है। इसके पश्चात वाणी की अधिष्ठात्री देवी माँ सरस्वती से ज्ञान और बुद्धि की याचना भावनात्मक गहराई को प्रकट करती है। भाषा सरल, सहज और सरस है, जिससे पाठक सहज ही जुड़ जाता है। छंद और लय में संतुलन है, जो काव्य को प्रभावशाली बनाता है। यह 'मंगलाचरण' आध्यात्मिक भावों के साथ काव्यात्मक सौंदर्य का उत्कृष्ट उदाहरण है। पंक्तियाँ प्रस्तुत हैं-

'प्रथम पूजते आपको, श्री गणपति-विघ्नेश।
विधिवत काज सँवारिए, हरिए सभी कलेश॥
माँ वाणी ! तुमको मैं ध्याऊँ।
मन में हर पल तुमको लाऊँ।।
सद्बुद्धि मुझे प्रदान करो।
माता मेरा कल्याण करो॥

अर्घ्य खंड

कवि शिव मोहन यादव ने प्रस्तुत खंडकाव्य के प्रथम 'अर्घ्य खंड' में प्रकृति, अध्यात्म, नैतिकता और न्याय की भावना का अत्यंत प्रभावशाली समन्वय प्रस्तुत किया है। इसमें कवि ने एक ओर यमुना तट की मनोहारी छटा का चित्रण किया है, तो दूसरी ओर ऋषि जीवन की गरिमा, तप की शक्ति तथा धर्म-संकट की गहनता को भी सजीव रूप में उकेरा है। पंक्तियाँ देखें-

'यमुना का रुचिर किनारा था।
वह बह्म-काल अति प्यारा था॥
चिड़ियों का कलरव गान हुआ।
फिर ऊषा का उत्थान हुआ॥

प्रारंभिक पंक्तियों में यमुना का शांत, रमणीय और जीवनदायी स्वरूप अत्यंत आकर्षक बन पड़ा है। भोर का समय, चिड़ियों का कलरव, पुष्पों की सुगंध और शीतल पवन, ये सभी प्रकृति के सौंदर्य को जीवंत कर देते हैं। कवि ने वृक्षों की महिमा का विस्तार से वर्णन करते हुए उनके पर्यावरणीय और औषधीय महत्व को भी रेखांकित किया है। यह भाग आज के संदर्भ में अत्यंत प्रासंगिक प्रतीत होता है, जहाँ प्रकृति संरक्षण एक वैश्विक चिंता है-

'फल-फूल, औषधी, रंग, बीज।
देते हैं उत्तम सभी चीज॥
दूषित प्रवात हर लेते हैं।
ऋतुचक्र श्रेष्ठ कर देते हैं॥

मुनि गालव का चरित्र इस काव्य का केंद्रीय आधार है। वे तप, संयम और करुणा के प्रतीक हैं। जब उनके अर्घ्य में अपवित्रता आती है, तो उनका क्रोध स्वाभाविक है, किंतु वे अपने तप की मर्यादा को समझते हुए तत्काल शाप नहीं देते। यह आत्मसंयम उनके उच्च चरित्र को दर्शाता है। यहाँ कवि ने यह संदेश दिया है कि शक्ति का प्रयोग विवेक के साथ होना चाहिए। आगे चलकर कथा में नाटकीयता आती है, जब मुनि गालव न्याय की अपेक्षा लेकर श्रीकृष्ण के पास पहुँचते हैं। उनका आक्रोश और पीड़ा दोनों ही स्वाभाविक हैं। श्रीकृष्ण का शांत, धैर्यपूर्ण और आश्वस्त करने वाला व्यवहार उन्हें ईश्वर के रूप में प्रतिष्ठित करता है। वे न केवल न्याय का वचन देते हैं, बल्कि उसे निभाने की शपथ भी लेते हैं। इस प्रसंग में धर्म और न्याय की स्थापना का भाव अत्यंत प्रभावी रूप में उभरकर सामने आया है। पंक्तियाँ देखें-

देने को शाप हुए उद्यत।
लेकिन फिर पलटा उनका मत॥
'वर्षों की कठिन तपस्या है।
देने में शाप समस्या है॥

इस खंडकाव्य का दूसरा खंड 'चिंतन खंड' है। कवि शिव मोहन यादव ने 'चिंतन खंड' में दार्शनिक द्वंद्व, मानवीय संवेदना और धर्म-संकट का अत्यंत प्रभावशाली चित्रण किया है। केशव (कृष्ण) जैसे सर्वशक्तिमान के मन में उत्पन्न दुविधा 'प्रण पालन बनाम नियति का विधान' इस खंड का केंद्रीय बिंदु है। कवि ने भगवान को मानवीय धरातल पर उतारकर उनके अंतर्द्वंद्व को अत्यंत सहज, मार्मिक और विश्वसनीय रूप में प्रस्तुत किया है। पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं-

'बैठे केशव चिंतित-निराश।
मुख था मलीन, खुद थे उदास।।
संकल्प सत्य कर पाऊँगा ?
कैसे मैं वचन निभाऊँगा ?

नारद और कृष्ण के संवादों के माध्यम से कथानक में गति आती है, वहीं चित्रसेन के प्रसंग से काव्य में करुणा और भय का सम्यक् संचार होता है। भाषा सरल, प्रवाहपूर्ण और छंदबद्ध है, जिससे भाव-संप्रेषण प्रभावी बन पड़ा है। उपदेशात्मकता भी कहीं बोझिल नहीं लगती, बल्कि जीवन-मूल्यों धैर्य, विवेक, परोपकार को सहज रूप में स्थापित करती है। कवि की विशेषता यह है कि वे पौराणिक कथा को केवल पुनर्कथन नहीं करते, बल्कि उसमें मनोवैज्ञानिक गहराई और नैतिक प्रश्नों का समावेश करते हैं। यह खंड कर्तव्य, करुणा और धर्म के बीच संतुलन की खोज का सशक्त उदाहरण है। पंक्तियाँ देखें-

'हैं चित्रसेन की आयु बड़ी।
उसकी मरने की नहीं घड़ी।।
यदि ऐसे उसको मारूँगा।
नियति को भी संहारूँगा।।

इस खंडकाव्य का तीसरा खंड 'ब्रह्मलोक भ्रमण खंड' है। कवि शिव मोहन यादव ने अपने खंडकाव्य के तीसरे 'ब्रह्मलोक भ्रमण खंड' में भय, संशय और आश्रय की मानवीय मनःस्थिति का अत्यंत सजीव चित्रण किया है। चित्रसेन का मनोविज्ञान मृत्यु-भय से उत्पन्न घबराहट, आत्मरक्षा की आकुलता और समाधान की खोज काव्य का मुख्य आधार है। कवि ने यहाँ पौराणिक प्रसंग को मानवीय संवेदना से जोड़ते हुए उसे अत्यंत प्रभावशाली बनाया है। पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं-

'चल दिए सेन पुष्यक लेकर।
भयभीत; मिलें ना कमलेश्वर।।
जब हदस मौत का होता है।
बलवान, श्रेष्ठ भी रोता है॥

इंद्रलोक का श्वेत-वर्णन विशेष उल्लेखनीय है, जिसमें सौंदर्य, वैभव और दिव्यता का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है। 'श्वेत' बिंबों की पुनरावृत्ति से एक अलौकिक दृश्य उपस्थित होता है, जो काव्य को चित्रात्मकता प्रदान करता है। संवाद शैली भी सशक्त है, ब्रह्मा और चित्रसेन के बीच वार्तालाप कथा को गति देता है तथा जटिलता को स्पष्ट करता है। काव्य में नैतिक संकेत भी निहित है कि अनजाने में हुई भूल भी परिणामदायी हो सकती है, और संकट की घड़ी में धैर्य व उचित मार्गदर्शन ही समाधान का पथ प्रशस्त करते हैं। पंक्तियाँ देखें-

'नीचे मगर देख नहिं पाया।
इस अनरथ ने मुझे फँसाया।।
मुझे भूल का भान नहीं था।
क्या गलती थी, ज्ञान नहीं था।।

प्रस्तुत खंडकाव्य का चौथा 'बैकुंठ भ्रमण खंड' है। कवि शिव मोहन यादव ने 'बैकुंठ भ्रमण खंड' में आध्यात्मिकता, भक्ति और दार्शनिक समन्वय का अत्यंत प्रभावपूर्ण चित्रण किया है। इस खंड में चित्रसेन की शरणागत भाव से युक्त विनम्रता तथा भगवान विष्णु की करुणामयी, किंतु मर्यादित भूमिका का सुंदर निरूपण हुआ है। कवि ने क्षीरसागर, शेषनाग और लक्ष्मी के माध्यम से बैकुंठ की दिव्यता और वैभव को अत्यंत सजीव बिंबों में प्रस्तुत किया है। पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं-

'तुम हो ईश्वर, हम हैं पापी,
भीख माँगता है संतापी।
शरणागत को क्षमा करें प्रभु !
मेरे सारे कष्ट हरें प्रभु !!

यहाँ विशेष उल्लेखनीय है कि विष्णु स्वयं अपनी सीमाओं का संकेत करते हैं, अवतार रूप में कृष्ण के संकल्प के समक्ष वे प्रत्यक्ष हस्तक्षेप नहीं कर सकते। यह प्रसंग दार्शनिक दृष्टि से 'अवतारवाद' और 'दैवीय विधान' के जटिल संबंधों को उद्घाटित करता है।

पाँचवें 'कैलाश भ्रमण खंड' में कवि शिव मोहन यादव ने 'कैलाश भ्रमण खंड' में आध्यात्मिक उत्कर्ष, नैतिक शिक्षाओं और मानवीय मनोदशा का अत्यंत संतुलित एवं प्रभावपूर्ण चित्रण किया है। चित्रसेन का भय, असहायता और अंतिम आश्रय के रूप में महादेव की शरण ग्रहण करना, इस खंड की भाव-धारा को गहन करुणा और आस्था से भर देता है। कैलाश का वातावरण गंगा, नंदी, वासुकी और ध्यानस्थ महाकाल काव्य को दिव्यता और पवित्रता प्रदान करता है। पंक्तियाँ देखें-

'हिम्मत में धीरज मिल जाए,
तो समझो जीवन खिल जाए।
जो भी हिम्मत से लड़ते हैं,
मुश्किल में आगे बढ़ते हैं॥

महादेव के उपदेश इस खंड का केंद्रीय तत्व है, जहाँ वे हिम्मत, विनम्रता, सदाचार और धैर्य को जीवन के वास्तविक साधन के रूप में स्थापित करते हैं। विशेष रूप से 'हिम्मत' पर दिया गया बल इसे केवल पौराणिक आख्यान न बनाकर जीवन-दर्शन का रूप देता है। शिव का यह कथन कि कृष्ण का संकल्प अटल है, किंतु विनम्रता से समाधान संभव है, धर्म और करुणा के समन्वय को उजागर करता है।

खंडकाव्य के छठवें 'इंद्र-लोक भ्रमण खंड' में कवि ने संकट की घड़ी में मानवीय संबंधों की वास्तविकता का अत्यंत मार्मिक और यथार्थपरक चित्रण किया है। चित्रसेन की व्याकुलता, आश्रय की तलाश और मित्रों से अपेक्षित सहयोग का न मिलना, इस खंड की प्रमुख भाव-धारा है। इंद्र जैसे शक्तिशाली देवता का भी भयभीत होकर सहायता से पीछे हट जाना, सत्ता की सीमाओं और स्वार्थपरता को उजागर करता है। कवि ने यहाँ 'मित्रता' की कसौटी को संकट के संदर्भ में परखा है। चित्रसेन का आत्ममंथन कर्ण जैसे सच्चे मित्र की स्मृति और इंद्र की निराशाजनक भूमिका इस खंड को नैतिक गहराई प्रदान करता है। साथ ही, 'बुरा वक्त' संबंधी शिक्षाप्रद पंक्तियाँ जीवन-दर्शन को सरल और प्रभावी ढंग से सामने लाती हैं। पंक्तियाँ देखें-

'जब-जब बुरा वक्त आता है।
सीख अलौकिक दे जाता है।।
यही सही पहचान कराता।
निज-गैरों में भेद बताता॥

खंड काव्य के सातवें 'व्यथा खंड' में कवि शिव मोहन यादव ने मानसिक संघर्ष, आशा-निराशा और कर्मप्रधान दृष्टि का अत्यंत सजीव चित्रण किया है। चित्रसेन की व्याकुलता और असहायता के बीच नारद का आगमन कथानक में नई दिशा देता है। यहाँ कवि ने समकालीन व्यंग्य का भी सुंदर प्रयोग किया है, विशेषतः 'समाचार' प्रसंग के माध्यम से, जिससे काव्य में नवीनता आती है। पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं-

'केवल कर्म बचा सकता है।
नवजीवन को ला सकता है।।
कर्मठ सदा उचित फल पाते।
कर्महीन बैठे रह जाते॥

नारद के उपदेश इस खंड की आत्मा हैं, जहाँ वे कर्म, साहस और आत्मविश्वास को जीवन-उद्धार का मूल मंत्र बताते हैं। साथ ही, गालव के अंतर्द्वंद्व के माध्यम से क्रोध से करुणा की ओर परिवर्तन का संकेत भी मिलता है। संकट में केवल कर्म और धैर्य ही मनुष्य को उबार सकते हैं। पंक्तियाँ देखें-

'कर्मशील यदि डट जाते हैं।
पर्वत पीछे हट जाते हैं।।
कर्मठ की है उच्च महत्ता।
कर्मठ बदल सके हर सत्ता॥

खंडकाव्य का आठवाँ 'नारद-चित्रसेन संवाद' है। कवि शिव मोहन यादव ने इस खंड में धार्मिक आस्था, लोकविश्वास और नैतिक जीवन-मूल्यों का सुंदर समन्वय प्रस्तुत किया है। व्यास-पूर्णिमा के पावन प्रसंग के माध्यम से कवि ने दान, उपवास, गुरु-पूजन तथा निस्वार्थ सेवा की महत्ता को प्रभावपूर्ण ढंग से उकेरा है। नारद का चरित्र यहाँ एक कुशल मार्गदर्शक के रूप में उभरता है, जो सुभद्रा को कर्म और गोपनीय दान की श्रेष्ठता का संदेश देता है। संवाद शैली सरल, प्रवाहमयी और भावप्रवण है, जिससे कथानक में जीवंतता आती है। विशेषतः 'कर्म को गुप्त रखने' का संदेश भारतीय संस्कृति की गूढ़ नैतिक परंपरा को उजागर करता है। पंक्तियाँ देखें-

'पर ये फल तब ही पाओगी।
जब कर्म नहीं बतलाओगी॥
जो दान-पुण्य सेवा करना।
सारा कुछ मन में ही रखना॥
यदि पीड़ित कोई मिल जाए।
तो जीवन तेरा खिल जाए॥
कर दोगी यदि तुम समाधान।
बन जाएगा तेरा विधान॥

कवि शिव मोहन यादव ने नवें खंड 'अभयदान' में प्रकृति-चित्रण, मानवीय करुणा और धर्म-संकट का अत्यंत प्रभावी समन्वय प्रस्तुत किया है। यमुना तट का शांत, सौंदर्यमय वातावरण कथानक की भूमिका को सजीव बनाता है, जिसके बीच सुभद्रा का करुणा-प्रेरित चरित्र उभरता है। चित्रसेन की व्यथा और 'अभयदान' की याचना कथा में नाटकीय तनाव उत्पन्न करती है। विशेषतः सुभद्रा का वचन और कृष्ण के संकल्प के बीच उत्पन्न द्वंद्व नैतिक जटिलता को दर्शाता है। कवि ने संवाद शैली के माध्यम से पात्रों की मनोस्थिति और संवेदनाओं को सहजता से अभिव्यक्त किया है। 'वचन-पालन' और 'धर्म-संकट' जैसे तत्व भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों की गहराई को उजागर करते हैं। पंक्तियाँ उदधृत हैं-

'देवी ! तुम कष्ट निवारक हो।
तुम ही पीड़ा संहारक हो॥
पीड़ा मैं तभी बताऊँगा।
अब वचन आपसे पाऊँगा॥
संकट से मुझे बचाओ तुम।
अर्जुन के लिए अनागत हूँ॥
देवी ! तेरा शरणागत हूँ॥

कवि शिव मोहन यादव ने दसवें खंड 'नारद-श्रीकृष्ण संवाद' में कथानक का अत्यंत नाटकीय और दार्शनिक विस्तार के साथ वर्णन किया है। कवि ने इस खंड में नारद, श्रीकृष्ण और अर्जुन के मध्य संवाद के माध्यम से कर्तव्य, वचनपालन और धर्मसंकट का सशक्त चित्रण किया है। अर्जुन का दृढ़ संकल्प और कृष्ण का धर्मनिष्ठ निर्णय कथा को द्वंद्वात्मक ऊँचाई प्रदान करते हैं। कवि ने आदर्श, कर्तव्य और मानवीय संबंधों के संघर्ष को सफलतापूर्वक उभारा है। यह खंड पाठक को गीता के मूल संदेश 'कर्तव्यनिष्ठा और धर्मपालन' की पुनः स्मृति कराता है। पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं-

'यदि खुद ईश्वर ललकारेंगे।
हम महायुद्ध स्वीकारेंगे॥ '
'मैं नत हूँ उनके चरणों से।
पर बँधा प्रिया के वचनों से॥ '
'ना छोड़ हस्तिनापुर जाऊँ।
ना चित्रसेन को ले जाऊँ॥ '
'जो गीता का गुर पाया था।
वह अर्जुन ने अपनाया था॥।

कवि शिव मोहन यादव के खंडकाव्य 'श्रीकृष्ण-अर्जुन युद्ध' का अंतिम 'युद्ध खंड' काव्य का चरम उत्कर्ष है, जहाँ श्रीकृष्ण और अर्जुन के मध्य धर्म, वचन और कर्तव्य का महान द्वंद्व महासमर का रूप ले लेता है। कवि ने युद्ध के दृश्य, अस्त्र-शस्त्रों की टकराहट और प्रकृति के प्रलयंकारी स्वरूप का अत्यंत सजीव एवं प्रभावशाली चित्रण किया है। विशेषतः सुदर्शन चक्र और पशुपतास्त्र के आमने-सामने आने से सृष्टि-संकट की स्थिति उत्पन्न होना कथा को अद्भुत नाटकीयता प्रदान करता है। पंक्तियाँ देखें-

'चल दीं दोनों सेनाएं, युद्ध-क्षेत्र की ओर।
इस घटना ने रख दिया, देवों को झकझोर॥ '
'माधव ने 'हमला' बोल दिया।
सेना का मुखड़ा खोल दिया॥ '
'कर दिया कृष्ण ने सिंहनाद।
हो गया युद्ध का शंखनाद॥ '
'तभी कृष्ण ने क्रोध में, उठा लिया सारंग।
मही, गगन डोले सभी, मचा घोर आतंक॥

इस खंड में भगवान शिव का हस्तक्षेप केवल युद्ध-निवारण ही नहीं, बल्कि धर्म-संतुलन और सृष्टि-रक्षा का प्रतीक बनकर उभरता है। अंततः अभयदान, क्षमा और समन्वय की भावना काव्य को शांति और मानवीय मूल्यों की ओर मोड़ देती है। भाषा ओजपूर्ण, भावप्रवण और चित्रात्मक है, जो पाठक को आरंभ से अंत तक बाँधे रखती है। यह खंड धर्म, भक्ति और समन्वय की महागाथा को चित्रित करता है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि शिव मोहन यादव का खंडकाव्य 'श्रीकृष्ण-अर्जुन युद्ध' अपनी विषय-वस्तु, संरचना और भाव-गहनता के कारण समकालीन हिंदी खंडकाव्य परंपरा में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि के रूप में प्रतिष्ठित होता है। इसके ग्यारहों खंड न केवल एक सुसंगठित कथानक का निर्माण करते हैं, बल्कि धर्म, कर्तव्य, आस्था, करुणा और मानवीय द्वंद्व के विविध आयामों को भी प्रभावशाली ढंग से उद्घाटित करते हैं।

यह खंडकाव्य परंपरा और आधुनिकता के समन्वय का सुंदर उदाहरण है, जहाँ पौराणिक प्रसंगों को नवीन दृष्टि और संवेदनात्मक गहराई के साथ प्रस्तुत किया गया है। इस दृष्टि से यह रचना मैथिलीशरण गुप्त की नैतिक चेतना, रामधारी सिंह दिनकर की ओजस्विता और धर्मवीर भारती की दार्शनिकता की परंपरा में सार्थक रूप से स्थापित होती दिखाई देती है।

कवि ने भाषा की सरलता, छंद की लयात्मकता और भावों की तीव्रता के माध्यम से काव्य को जनसुलभ बनाया है। साथ ही, संवादों और घटनाओं के माध्यम से जीवन-मूल्यों की पुनर्प्रतिष्ठा का सफल प्रयास किया है। खंडकाव्य 'श्रीकृष्ण-अर्जुन युद्ध' केवल एक पौराणिक आख्यान नहीं, बल्कि जीवन-दर्शन, नैतिकता और मानवीय चेतना का एक सशक्त काव्य-दस्तावेज है, जो हिंदी साहित्य में दीर्घकाल तक अपनी प्रासंगिकता बनाए रखने की क्षमता रखता है।